आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 31 March, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" निस्वार्थ सेवा : हम कच्चे फल नहीं खायें बल्कि प्रत्यक्ष फल ग्रहण करने की आदत डालें "*

हम यह जानते है कि **श्रेष्ठ कर्मों** का पदमगुणा फल हमें मिलना ही है। जो ईश्वरीय कार्य में **सहयोगी** बन गये, जो यज्ञसेवा मैं तत्पर है, जो **पुण्य कर्म** कर रहे है, उनको उनका फल बहुत मिलेगा ही।

लेकिन यदि हमारी इच्छा रहती है के तत्काल फल मिल जाये, मतलब हमारा नाम हो जाये, हमें बहुत मान मिले, हमें इस कर्म के बदले **साल्वेशन** मिल जाये, सुविधा मिल जाये, तो इसको कहेंगे कच्चा फल खाना।

वास्तव में कच्चा फल तो नुकसान करता है। हमें प्रत्यक्ष फल अवश्य प्राप्त करना चाहिए। और प्रत्यक्ष फल है **अतीन्द्रिय सुख, प्रत्यक्ष फल है बहुत सूक्ष्म अंतर की गहराई की संतुष्टता।**

तो हम कच्चा फल न खाये। **कर्म करके प्रभु अर्पण कर दिया करे।** और ज्यादा फल मिलेगा। क्योंकि अगर मान-शान की हमारी इच्छा रहती है तो यह इच्छा हमें अच्छे कर्म नहीं करने देती।

यह कामना हमें कमजोर करती है। और कही कही अगर हमारी यह कामना पूरी हो जाये, तो यह कामना मनुष्य के **अभिमान** को बढ़ा देती है। उसके **मैं पन** में **वृद्धि** कर देती है।

हम इनसे बचेंगे और यह ध्यान रखेंगे, बहुत सुन्दर बात। जो इस नाम-मान-शान की कामना से न्यारे हो जाते है सारा संसार उन्हें मान देगा।

जैसे मंदिरों में इष्ट देव देवी को मान देने के लिए भक्तों लाईन लगाकर खड़े रहते है, ऐसे ही **जो मान-शान की कामनाओं से परे हो जायेंगे वो अधिकारी बन जायेंगे सच्चे दिल के मान को प्राप्त करने के।**

सारा संसार बाहर से नहीं, उन्हें खुश करने के लिए नहीं, लेकिन उन्हें मान देकर अपने को गौरवान्वित अनुभव करेगा।

तो आईये हम ऐसे कच्चे फल का त्याग करे। पुण्य कर्म निष्काम भाव से करते चले। तृप्त होकर करते चले। इस फीलिंग के साथ करते चले के यह जो महान कार्य करने की जो योग्यता, **जो शक्तियाँ हमें मिली है यह परमात्मम देन है।**

इस परमात्मम देन में हम कभी मैं पन न आने दे। अगर परमात्मम देन में मैं पन आ जाता है तो इससे हमारे पुण्य समाप्त हो जाते है। भूल से भी हमें यह मैं पन नहीं आने देना है।

अन्यथा याद रखेंगे बाबा के यह महावाक्य ...

" मेरा पन आना माना खजाना को गॅवाना "

क्योंकि मैं पन आने से दुसरे लोग समझ जाते है और उनके ओर से अच्छी दृष्टि नहीं मिल पाती है। तो हम कर्म करने की ऐसी कला को डेवेलप करे कि हमारा हर कर्म निष्काम भाव से हो रहा हो।

जैसे **बाबा विश्व का कल्याण करते है** और उसकी रिटर्न में उन्हें कुछ भी पाने की इच्छा नहीं, वो यह भी नहीं चाहते बच्चे मेरा सम्मान करे, मेरी महिमा करे।

ठीक वैसे ही हमें फालो करना है और यह फीलिंग को बढ़ा देनी है .... " **मैं विश्वकल्याणकारी हूँ** .. मुझे हर कर्म निष्काम भाव से करना है बाबा की तरह "

बस महान कर्म करते चले। दुसरों को मदद करते चले। और बदले में लेने की कोई भी कामना न रहे। **सूक्ष्म रूप से चेक कर ले।** हमें देने की वृत्ति है या लेने की सूक्ष्म इच्छा रहती है।

चाहे स्थूल चीजें, चाहे सूक्ष्म यह बाते। हम तो दाता है। दाता के बच्चे है। देते चले, हमारे भण्डारें भरपूर रहेंगे।

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान का अभ्यास करेंगे ...

" मैं मास्टर क्रियेटर हूँ .. रचयिता हूँ .. दाता हूँ "

और अभ्यास करते रहेंगे कि ...

" बाबा की शक्तियों की किरणें एक फाउन्टेन के रूप में निरंतर मुझ पर निरंतर पड़ रही है "

जैसे की शक्तियों के फाउन्टेन के नीचे हम स्नान कर रहे है।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org